>

Title: Regarding death of a CRPF personnel.

डॉ. भोला सिंह (नवादा): सभापति जी, मैं आसन के प्रति आभार प्रकट करता हूं कि आपने मुझे एक गम्भीर विषय की ओर केन्द्र सरकार का ध्यान आकृष्ट करने के लिए बोलने का समय दिया। शहादत के चिराग राष्ट्रीय अस्मिता की रखवाली के प्रतीक हैं। उनके शरीर का एक-एक कतरा भारत मां की आराधना है, साधना है और उप्रेरणा का पैगाम है। परंतु जब साधना और कुर्बानी लांछित होने लगती है तो भारत मां के रोंये-रोंये आंसुओं के सागर में डूब जाते हैं। श्री अभिषेक कुमार पेशर स्व.दयानंद साव, ग्राम पोस्ट नवादा शहर, जिला नवादा, बिहार 130 सीआरपीएफ बटालियन में सेवारत था। दि.08.08.2010 को देश के सभी मीडिया चैनलों में यह खबर आई कि शहीद अभिषेक आतंकवादियों की गोलियों का शिकार हुआ है। जब सारा बिहार और देश उसकी गौरवशाली शहादत पर चिंतन कर रहा था तो 10.08.2010 को उसकी लाश के साथ कमांडेन्ट का एक पत्र भी आया था। कमांडेन्ट ने अपने उस पत्र में अभिषेक की शहादत को उसकी आत्महत्या बताया और उसके कारण में बताया कि उसकी अपनी पत्नी के साथ अनबन रहती थी। इसलिए उसने आत्महत्या की। शहादत को लांछित करने के लिए कमांडेन्ट का यह पत्र असत्य का रुप था। जब अभिषेक की शादी ही नहीं हुई तो पत्नी के साथ अनबन का प्रश्न कहां उठता है। यदि उसकी आत्महत्या थी तो उसकी प्राथमिकी, पोस्टमार्टम रिपोर्ट उसके परिवार को क्यों नहीं सौंपी गई? अभिषेक के घर में एक विधवा मां, चार कुंवारी बहनें एवं दो कुंवारे भाई हैं। अभिषेक अपने भाइयों में मंझला था। तीनों भाई कुंवारे थे।

महोदय, मैं अभिषेक के परिवार से जाकर मिला हूं। अभिषेक के घर में आज भी छप्पर पर खपरैल नहीं हैं। कुंवारी बहनों की शादी तक नहीं हुई है। वह मरहूम अपने परिवार का एक मात्र भगवान था। मैं सरकार से मांग करता हूं कि वह इस असत्य की जांच करके शहीद अभिषेक की शहादत को सम्मानित करें और उसका परिवार जो शहादत का चिराग है, उसे बुझने से बचाने के लिए राहत का पैकेज दे। उसकी शहादत को शहीदों की कतार में शामिल करें। यदि ऐसा नहीं हुआ तो राष्ट्रीय अस्मिता ऐसे कदम से विखंडित होगी।

सभापति जी, मैं आपके माध्यम से इस ओर सरकार का ध्यान आकृष्ट करता हूं।

सभापति महोदय : श्री अर्जुन राम मेघवाल अपने आपको इस विषय से सम्बद्ध करते हैं।